Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : उदासीनता वक्र एवं उपभोक्ता सन्तुलन (INDIFFERENCE CURVE & CONSUMER'S EQUILIBRIUM)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

उदासीनता वक्र एवं उपभोक्ता सन्तुलन (INDIFFERENCE CURVE & CONSUMER'S EQUILIBRIUM)
(क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण-1)
(Ordinal Utility Analysis-1)

प्रारम्भिक (Introductory)

मार्शल के 'उपयोगिता विश्लेषण' (Utility Analysis) में निहित दोषपूर्ण एवं अव्यावहारिक मान्यताओं के कारण एक ऐसी वैकल्पिक विचारधारा की आवश्यकता अनुभव की गयी जो व्यावहारिकता के निकट हो। हिक्स एवं ऐलन (Hicks & Allen) नामक अर्थशास्त्रियों ने 'उदासीनता वक्र विश्लेषण' नाम से एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यह विचारधारा 'उपयोगिता विश्लेषण' की परिमाणात्मक उपयोगिता (Quantitative Utility) की मान्यता के स्थान पर क्रमसूचक दृष्टिकोण (Ordinal Viewpoint) को प्रस्तुत करती है। प्रो. हिक्स ने 1939 में 'Value and Capital' और 1956 में एक अन्य पुस्तक 'A Revision of Demand Theory' में उदासीनता वक्र विश्लेषण को पूर्णरूपेण विकसित किया। हिक्स के अनुसार उपभोक्ता के व्यवहार के अध्ययन का आधार क्रमसूचक प्राथमिकता (Ordinal Preference) है, जिसके अनुसार उपभोक्ता के विभिन्न सन्तुष्टि स्तरों को परिमाणात्मक अन्तरों से स्पष्ट नहीं किया जा सकता बल्कि उपभोक्ता अपने वरीयता क्रम (Preference Order) को ध्यान में रखकर विभिन्न संयोगों से प्राप्त सन्तुष्टि स्तरों को क्रमवाचक संख्याएँ (Ordinal Numbers) देकर एक क्रम बनाता है। क्रमवाचक संख्याएँ केवल यह स्पष्ट करती हैं कि उपभोक्ता किस संयोग से कम सन्तुष्टि प्राप्त कर रहा है और किस संयोग से अधिक किन्तु इन क्रमवाचक संख्याओं से सन्तुष्टि स्तरों का अन्तर मात्रात्मक रूप से ज्ञात नहीं किया जा सकता।

वस्तुतः प्रो. हिक्स एवं ऐलन से पूर्व कुछ अर्थशास्त्री उदासीनता वक्र विश्लेषण की मूल विचारधारा का प्रतिपादन कर चुके थे। सर्वप्रथम प्रो. एजवर्थ (Edgeworth) ने 1881 में स्पर्द्धात्मक एवं पूरक वस्तुओं की व्याख्या के लिए उदासीनता वक्र का विचार प्रस्तुत किया था। तदुपरान्त प्रो. परेटो (Pareto) ने इस विश्लेषण के लिए क्रमवाचक संख्याओं की मान्यता का विकास किया। इसी क्रम में रूस के अर्थशास्त्री प्रो. स्लट्स्की (Slutsky) का नाम आता है। किन्तु प्रो. हिक्स ऐलन ने ही उदासीनता वक्र विश्लेषण को वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध आधार देकर पूर्णरूप से विकसित किया।

उदासीनता तालिका एवं उदासीनता वक्र (INDIFFERENCE TABLE & INDIFFERENCE CURVE)

उपभोक्ता का व्यवहार उसकी उदासीनता तालिका (Indifference Table) से प्रदर्शित किया जाता है। उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि देने वाले दो वस्तुओं के विभिन्न संयोग उदासीनता तालिका के अंग होते हैं। इसी उदासीनता तालिका को ग्राफ के रूप में प्रदर्शित करके उदासीनता वक्र प्राप्त किया जाता है।

वॉटसन के शब्दों में, "उदासीनता तालिका दो वस्तुओं के संयोगों की तालिका है जिसको इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि उपभोक्ता उन संयोगों के प्रति उदासीन होता है और किसी एक को अन्य की तुलना में वरीयता नहीं देता। "

प्रो. मेयर्स के अनुसार, "उदासीनता तालिका वह तालिका है जो कि दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोगों को बताती है जिनसे किसी व्यक्ति को समान सन्तोष प्राप्त होता है। यदि इस तटस्थता तालिका को एक रेखा के रूप में दिखाया जाय तो हमें तटस्थता वक्र रेखा प्राप्त हो जाती है। "

इस प्रकार तटस्थता वक्र रेखा का प्रत्येक बिन्दु दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों के साथ-साथ सन्तुष्टि के समान स्तर को बताता है।

उपर्युक्त विचारधारा को एक काल्पनिक उदासीनता सारणी के आधार पर स्पष्ट किया गया है-

उदासीनता सारणी में उपभोक्ता के छः उपभोग संयोगों को दिखाया गया है जिनके मध्य उपभोक्ता उदासीन है। चाहे वह संयोग A को चुने या किसी अन्य B, C, D, E अथवा F" को, सभी संयोग उसे समान सन्तुष्टि प्रदान करते हैं। यदि इस उदासीनता सारणी को एक रेखाचित्र में निरूपित किया जाय तो हमें संलग्न चित्रानुसार उदासीनता वक्र प्राप्त होता है।

सारणी 1. उदासीनता सारणी

संयोग	वस्तु X	वस्तु Y
A	1	20
B	2	15
C	3	11
D	4	8
E	5	6
F	6	5

चित्र 1 में IC एक उदासीनता वक्र है। यह वस्तु X एवं Y के ऐसे विभिन्न संयोगों का बिन्दु पथ है जिनसे उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि मिलती है। उपभोक्ता के पास X वस्तु की 1 इकाई तथा Y वस्तु की 20 इकाई उपलब्ध हैं जो संयोग A (1X + 20Y) बनाती है। अन्य संयोग B (2X + 15Y), संयोग C (3X + 11Y), संयोग D (4X + 8Y), संयोग E (5X + 6Y) तथा संयोग F (6X + 5Y) उपभोक्ता को पहले संयोग A के बराबर सन्तुष्टि देते हैं। ऐसी स्थिति में उपभोक्ता इन संयोगों के प्रति तटस्थ या उदासीन है।

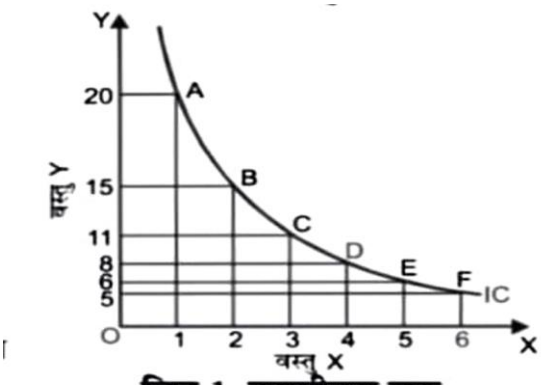

चित्र 1. उदासीनता वक्र

उदासीनता वक्र विश्लेषण की मान्यताएँ (ASSUMPTIONS OF INDIFFERENCE CURVE ANALYSIS)

(1) उपभोक्ता का विवेकपूर्ण व्यवहार (Rational Behaviour of the Consumer) - उपभोक्ता एक विवेकपूर्ण प्राणी है जो अपने सीमित साधनों की सहायता से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह अनेक उपलब्ध संयोगों में से उस संयोग को चुनता है जिससे उसे अधिकतम सन्तुष्टि मिलती है।

(2) क्रमवाचक दृष्टिकोण (Ordinal Viewpoint) - उदासीनता वक्र विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि उपभोक्ता संयोगों से प्राप्त सन्तुष्टि को एक वरीयता क्रम प्रदान कर सकता है। सन्तुष्टि एक मानसिक वृत्ति है जिसको संख्यात्मक रूप से मापना असम्भव है।

(3) उपभोक्ता का संगत व्यवहार (Consistent Behaviour)- इस मान्यता के अनुसार, यदि उपभोक्ता उपभोग के लिए उपलब्ध दो संयोग A और B में उदासीन है तथा संयोग B तथा संयोग C में भी उदासीन है तो वह संयोग A और संयोग C में भी उदासीन होगा।

(4) घटती हुई सीमान्त प्रतिस्थापन दर (Diminishing Marginal Rate of Substitu-tion)- इस मान्यता के अनुसार उपभोक्ता यदि उपभोग की एक वस्तु की मात्रा बढ़ाता चला जाता है तो प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से बदले वह दूसरी वस्तु की कम मात्रा का त्याग करने को तैयार होता है। इसी घटती सीमान्त प्रतिस्थापन दर के कारण उपभोक्ता अनेक उपभोग संयोगों में उदासीन रहता है और एकसमान सन्तुष्टि प्राप्त करता है।

(5) दुर्बल क्रमबद्धता (Weak Ordering)- यह मान्यता यह बताती है कि उपभोक्ता दो संयोगों के मध्य उदासीन हो सकता है किन्तु प्राप्त संयोगों में से एक संयोग को अन्य की तुलना में नहीं चुन सकता।

(6) सकर्मकता (Transitivity) की मान्यता इसका अभिप्राय यह है कि यदि एक परिस्थिति में उपभोक्ता ने संयोग A को संयोग B की तुलना में चुना है तथा संयोग B को संयोग C की तुलना में चुना है तो निश्चित रूप से वह A संयोग को संयोग C की तुलना में भी चुनेगा।

(7) समरूप एवं विभाज्य वस्तुएँ (Homogeneous & Divisible Goods) - वस्तुएँ एकरूप तथा विभाज्यनीय (Homogeneous and Divisible) होती हैं। उपभोक्ता जिन वस्तुओं का उपभोग करता है उन्हें छोटी-छोटी इकाइयों में बाँटा जा सकता है।